हिन्दी - विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G. II Sem.

विषय — ~~आलोचना~~ आलोचना की शास्त्रीय पद्धति

इस आलोचना पद्धति में कृति के अन्तर्गत किये रस, भाव अलंकार, भाषा और शैली आदि की शास्त्रीय दृष्टिकोण से व्याख्या और समीक्षा की जाती है। यह पद्धति अत्यन्त उपयोगी है, किन्तु इसका सबसे बड़ा दोष यही है कि यह पद्धति कृति अथवा कृतिकार के व्यक्तित्व और उसकी विशेषताओं को उपेक्षित कर देता है। इस आलोचना पद्धति में कतिपय पूर्व निर्धारित नियमों की कसौटी लेकर सभी कृतियों को समान धरातल पर परखा जाता है। ऐसी स्थिति में आलोचना के अन्तर्गत सहृदयता की तुलना में जटिलता का समावेश अधिक हो जाता है।

मनोविश्लेषणात्मक आलोचना — आधुनिक आलोचना पद्धतियों के क्रम में मनोविश्लेषणात्मक पद्धति भी आधुनिक युग की प्रमुख समीक्षा पद्धति है। इस आलोचना पद्धति का उद्देश्य रचनाकार

सिद्धान्तों का निर्धारण और साहित्य की नयी धाराओं से इतना ही नहीं वह साहित्य की समस्याओं से परिचित विषय में भी लेखकों को उत्तर प्रदान करता है। उदाहरण के लिए शास्त्र और प्रेरणा प्रदान की दिशा दी जा सकती है। हिन्दी काव्य शास्त्र को सब, और हमारा हिन्दी काव्य शास्त्र जहाँ संस्कृत आचार्यों की देन है, वहीं इसकी ओर पाश्चात्य साहित्य शास्त्र से भी प्रभावित है। व्यावहारिक आलोचना वास्तव में सैद्धान्तिक आलोचना का प्रमुख आधार है। हिन्दी में सैद्धान्तिक आलोचना के प्रमाण स्वरूप 'कन्हैया लाल पोद्दार' की 'रसमंजरी', डॉ० 'गुलाबराय' की 'नवरस', आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की 'रस मीमांसा' और 'डॉ० नगेन्द्र' की 'रस-सिद्धान्त' जैसी कृतियों को सैद्धान्तिक आलोचना के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

<u>व्यावहारिक आलोचना</u> – व्यावहारिक आलोचना सैद्धान्तिक आलोचना द्वारा निश्चित किए गये सिद्धान्तों की कसौटी पर साहित्य की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करती है। साहित्य की आलोचना के आधारभूत तीन तत्व हैं :— प्रभाव ग्रहण, व्याख्या विवेचन और निर्णय या मूल्यांकन

ये तीनों ही आलोचना पद्धतियाँ अपनी अलग अलग महत्ता रखती है। संक्षेप में कहा जाय तो व्यावहारिक आलोचना सैद्धान्तिक आलोचना द्वारा निर्धारित सिद्धान्तों के आधार पर ही की गई समीक्षा है।

प्रभावात्मक आलोचना — इसे व्यक्तिनिष्ठ आलोचना भी कहा जा सकता है। मनुष्य के स्वभाव की विशेषता है कि वह वस्तु विशेष के सम्पर्क में आकर उसके संबंध में कुछ विशिष्ट प्रभावों का अनुभव करता है। प्रभाववादी समीक्षक की रुचि का परिष्कृत होना अत्यन्त आवश्यक है। 'डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्ता' ने लिखा है कि वस्तुतः आलोचक की रुचियों पर उसकी आयु, संस्कारों तथा मनोदशा का आरोप रहता है। हिन्दी समीक्षकों में 'शांतिप्रिय द्विवेदी' प्रभाववादी समीक्षा के प्रमुख समीक्षक माने जाते हैं।

व्याख्यात्मक आलोचना — इस समीक्षा के अन्तर्गत आलोचक को अपनी ओर से कोई निर्णय लेने का अधिकार नहीं है वह तो रचना में निहित हुई प्रवृत्तियों की खोज करता हुआ उसके गुणों अवगुणों की व्याख्या मात्र करता है। स्पष्ट में इस आलोचना पद्धति के अन्तर्गत आलोचक की निजी प्रतिक्रियाओं का महत्व नहीं होता

व्याख्यात्मक आलोचना की आलोचना के गुण है। 'हडसन' ने लिखा है - व्याख्यात्मक आलोचक आलोच्य वस्तुओं को समझाने के उसकी व्याख्या करने के लिए जितना उत्सुक रहता है उतना उसके गुण - दोषों के लिए नहीं। व्याख्यात्मक आलोचना में न तो प्रभाववादी समीक्षा की तरह व्यक्तिगत रुचि के सहारे ग्रहण किया जाता है और न निर्णयात्मक की शैली को ही अपनाया जाता है। व्याख्यात्मक आलोचना नियमों को परिवर्तनशील मानती है। उस परिवर्तनशीलता के कारण निर्णयात्मक से इसका मतभेद हो जाता है। हिन्दी में 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल', 'श्याम सुन्दर' और 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी' इसी आलोचना प्रकार में विश्वास रखते हैं। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि व्याख्यात्मक आलोचना पद्धति साहित्य की वास्तविकताओं की व्याख्या करती